REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2023

सतना जिले में पर्यटन आकर्षण का अध्ययन

श्रीमती साधना कुशवाहा[1], डॉ. आर.के. शर्मा[2]
[1]शोधार्थी, भूगोल शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]प्राचार्य इन्द्रा स्मृति महाविद्यालय, न्यू रामनगर, सतना (म.प्र.)

सारांश –
आदिकाल से लेकर आज तक जब से मानव जाति ने धरती पर जन्म लिया है, तब से मानव भ्रमणशील रहा है। प्रकृति में समय और काल के अनुसार मानव को भ्रमण करने के लिए विवश किया है। भूदृश्य निहित प्राकृतिक, सांस्कृतिक विविधता और तत्सम्बन्धी आकर्षण पर्यटन का जन्म एवं विकास होता है। मानव स्वभाव से ही जिज्ञासु होता है और अपनी इस जिज्ञासा की पूर्ति हेतु न केवल अपने दायरे या देश तक ही सीमित रहता है अपितु अपने देश से बाहर देखने व परखने की लालसा भी उसके अन्दर बनी रहती है, जो उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसी स्वाभाविक प्रवृत्ति एवं लालसा का ही प्रतिफल अर्थात क्रियात्मक रूप है पर्यटन।

मूल शब्द : मानव जाति, भ्रमणशील, पर्यटन एवं ।

परिचय :

आज पर्यटन उद्योग के विकास के लिए अनेक चुनौतियाँ हैं। आवश्यकता इस बात की है कि पर्यटन के लिए उचित वातावरण तैयार करने की एवं प्रदेश तथा देश का सैलानियों के स्वर्ग के रूप में एक आकर्षक छवि प्रस्तुत करने की पर्यटन क्षेत्र में प्रादेशिक विविधताओं के अनुरूप सतत शोध अन्वेषण की आवश्यकता है एवं जन सामान्य की सहभागिता हेतु पर्यटन विकासक्रम को बढ़ावा देने के लिए पोस्टर, बैनर, मॉडल, मॉडयूल्स, मानचित्र, आरेख, पर्यटन से सम्बन्धित नारे, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, कार्यशाला, कार्यक्रम आयोजन की आवश्यकता है। पर्यटन विभााग द्वारा प्रायोजित विदेशी पर्यटक सर्वेक्षण एवं प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर पर्यटन विकास के लिए सम्बर्द्धनात्मक उपायों में दो बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रथम उन क्षेत्रों की ओर प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है जो अभी तक उपेक्षित रहे हैं जहाँ पर्यटकों को आकर्षित करने की संभावनायें हैं। दूसरे परम्परागत पर्यटकों को प्रोत्साहन के साथ–साथ उन पर्यटकों को आकर्षित करने का प्रयास किया जाये जो साहसिक भ्रमण जैसे–पर्वतारोहण, ट्रेकिंग वाले भ्रमण आदि कई कार्यक्रमों की अपेक्षा अभिरूचि के कुछ गिने चुने स्थानों पर आरामदायक भ्रमण की व्यवस्था अधिक उपयोगी होगा। सतना जिला भी इसका अपवाद नहीं है, जिले में विद्यमान पर्यटन राज्यों का सर्वाधिक महत्व है।

सतना जिला के सुप्रसिद्ध दर्शनीय एवं पर्यटन स्थल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व हेतु जाना जाता है। जिले में इतिहास से जुड़ी काफी संरचनाएं परिलक्षित होती है। यहाँ उपलब्ध धार्मिक, औद्योगिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, जैविक और पुरातात्विक महत्वपूर्ण वाले स्थान पर वर्ष भर पर्यटकों का आवागमन लगा रहता है।

सतना जिला की पावन टोन्स नदी के तटीय भागों पर विद्यमान मैहर, चित्रकूट एवं बिरसिंहपुर मुख्य धार्मिक स्थल है। जिला में जलप्रपात, चित्रकूट, भरत मिलाप मन्दिर, गुप्त गोदावरी, जानकी कुण्ड, हनुमानधारा और सती अनुसुइया आदि स्थानों का भ्रमण किया जाता है। यहाँ का जल प्रपात, नदियाँ, वन, मन्दिर और धार्मिक स्थान अपनी गरिमा और गौरव के लिए प्रसिद्ध है तथा पर्यटन आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

सतना जिला अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सौन्दर्यपूर्ण पर्यटन स्थल हेतु विख्यात है। सतना जिले में प्रवाहित होने वाली सतना नदी एवं यहाँ की पावन नदी टोंस प्राकृतिक रूप से इस संवारने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। इस जिले का महत्व महाभारत काल से ही रहा है और इसके आसपास जैन, बौद्ध एवं हिन्दू धार्मिक स्थल इस भू–भाग के ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व का वर्णन करते हैं। सतना जिला पूर्णरूप से बघेलखण्ड के परिक्षेत्र में आता है। यह भू–भाग अत्यंत रमणीय, शान्त पर्यावरण/वातावरण मन को प्रफुल्लित करने वाला जिला है। जहाँ प्रेम, सद्भाव, व्यवहार आपसी भाईचारा सबसे पहले आता है। मध्यप्रदेश का सतना सर्वाधिक व्यापक, सीमेन्ट फैक्ट्री एवं सीमेंट उत्पादन हेतु सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। सतना जिला मध्यप्रदेश के रीवा जिला के एक सम्भाग का एक भाग है, इसका प्रशासनिक मुख्यालय सतना शहर में ही विद्यमान है।

विश्लेषण –

सतना एक प्राचीन स्थल है, जहाँ देखने एवं घूमने फिरने हेतु अनेक शानदार स्थान उपलब्ध है। प्राचीन एवं धार्मिक स्थानों की यहाँ भरमार है। जिले के अन्तर्गत चित्रकूट धाम एवं मैहर माता का मन्दिर देश के सुविख्यात धार्मिक स्थानों में गिना जाता है। जहाँ प्रत्येक मौसम में पर्यटकों का आना जाना लगा रहता है। व्यक्ति अपने आत्मिक एवं मानसिक शांति हेतु चित्रकूट का भ्रमण कर सकता है। यहाँ की मान्यता है कि इस स्थान पर प्रभु श्रीराम का आगमन से सम्बोधित किया जाता है। इसी घाट पर श्रीराम, पत्नी सीता एवं भाई लक्ष्मण ने स्नान किये थे। जिले के भरत मिलाप मन्दिर, जानकी कुण्ड, चित्रकूट जलप्रपात, पंपापुर, सती अनुसुइया आश्रम, गुप्त गोदावरी और हनुमानधारा इत्यादि स्थानों को पर्यटन की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। सतना जिले में मैहर माता का एक सुविख्यात मन्दिर है। सतना जिले में पर्यटन की दृष्टिकोण से अनेक स्थल उपस्थित है जिसमें चित्रकूट हिल्स और शारदा मन्दिर, जगत देवी तालाब माधवगढ़ कोर्ट, और वेंकटेश मन्दिर इत्यादि स्थानों को सम्मिलित किये गये हैं। सतना जिला के पर्यटन स्थलों का विवरण क्रमशः निम्नानुसार है –

- ऐतिहासिक प्राचीन विष्णु का मन्दिर
- बृहस्पति कुण्ड पर्यटन स्थल
- श्री वेंकटेश्वर का मन्दिर
- जगत तालाब धार्मिक स्थल
- राजा बाबा का झरना एवं मन्दिर
- सरभंगा का आश्रम पर्यटन स्थल
- पुष्पकर्णी पार्क
- बाणसागर बांध
- रिजर्व पर्यटन स्थल
- मुकुन्दपुर व्हाईट टाइगर सफारी
- माँ शारदा देवी मन्दिर
- पन्नी खोह जलप्रपात
- चित्रकूट धाम
- धारकुण्डी आश्रम
- नागौद किला

- रामवन सतना
- पारस मनिया पर्वत एवं झरना
- बिरसिंहपुर सतना
- राजा बाबा जलप्रपात
- भरहुत
- महेश्वर नाथ मन्दिर
- वैष्णों देवी मन्दिर सतना
- सतना का आल्हा उदल अखाड़ा
- मैत्री पार्क
- माधवगढ़ किला
- चित्रकूट के दर्शनीय स्थल
- गुप्त गोदावरी
- रामघाट
- लक्ष्मण मन्दिर
- राम भरत मिलाप मन्दिर
- स्फटिक शिला
- हनुमानधारा
- सीता रसोई
- अत्रि आश्रम
- बिरला सीमेंट उद्योग
- मैहर सीमेंट उद्योग
- यूनिवर्सल केबल्स

सतना जिला प्राकृतिक सुन्दरता से भरा पड़ा है। सतना जिला अनेक ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक दर्शनीय स्थानों से सम्पन्नशील है। यहाँ अनेक धर्म सम्प्रदायों की उत्पत्ति हुई है और उनकी प्रचार स्थली है। पर्यटन की दृष्टिकोण से इस भू–भाग में प्राकृतिक विभिन्नता, पर्वतीय श्रृंखला, मैदानी भाग, पठारें, जल प्रपात, नदियाँ, कन्दराएं, झील, जलाशय और जलधाराएं हैं। जिले की जलप्रपातों का दृश्य अत्यंत ही मनोरम है। जिले की धरातल पर्वतीय, घाटी, पठारी कन्दरायें एवं मैदानी पर्यटकों के आकर्षण के प्राकृतिक भूदृश्य हैं। जिले की प्राकृतिक सुन्दरता पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। सतना जिले में प्रवाहित होने वाली नदियों का कलकलाती जलधाराएँ पर्यटकों के मन को मोह लेती है। यहाँ हरे–भरे जंगल, पेड़–पौधों व वनस्पतियों का सुन्दर नजारा देखने में काफी अच्छा लगता है। सतना जिले की प्राकृतिक स्वरूप से आकर्षित करने वाले स्थानो की जानकारी निम्नानुसार है –

- **राजा बाबा झरना, सतना –** राजा बाबा मन्दिर एवं राजा बाबा झरना सतना शहर में विद्यमान एक प्राकृतिक व दर्शनीय स्थल है। यहाँ पर आने वाले पर्यटकों को एक प्राचीन मन्दिर और झरना देखने हेतु मिलती है। यह झरना एवं मन्दिर जंगल के मध्य भाग में बसा है। यहाँ पर आने के पश्चात पर्यटकों का मन आनंदित हो उठता है। इस स्थान पर बरसात के समय चारों ओर हरियाली रहती है। झरने में बहुत जल भरा रहता है। आगुन्तकों द्वारा यहाँ स्नान करने का आनंद उठाया जाता है। गर्मी के दिनों में इस झरने मे पानी कम हो जाता है। पर्यटन की दृष्टिकोण से यह समय व्यतीत करने हेतु उत्तम स्थल है। इस स्थल पर सर्वाधिक भीड़भाड़ नहीं होता है क्योंकि यह मन्दिर व झरना सतना जिले के परसमनियाँ पहाड़ी पर विद्यमान है। पर्यटकों को इस स्थल पर पहुँचने हेतु गाड़ी का सहारा लेना पड़ता है।

- **पन्नी झरना मैहर, सतना –** पन्नी झरना सतना जिले में मैहर के पास स्थित है। यह झरना मैहर से तकरीबन 15 किमी. की दूरी पर विद्यमान है। इस झरने पर पर्यटक वाहन से आवागमन कर सकते हैं और पैदल भी। यह झरना अत्यधिक घने जंगलों के बीच में विद्यमान है। इस झरने तक जाने का रास्ता भी जंगल से होकर जाता है। पन्नी झरना के पास एक प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर पहाड़ों के बीच में गुफा से बना हुआ है। विदित होता है कि इन मन्दिरों मे संत तपस्या किया करते थे। बरसात के समयावधि इन गुफाओं में पानी रिसता है। पर्यटक इस झरने में जाते हैं तो यहाँ नहाने का आनंद भी उठाते हैं। यह झरना बहुत ही सौन्दर्यपूर्ण है तथा देखने में अत्यन्त ही रमणीय लगता है। बरसात के समय यहाँ की खूबसूरती में चार चांद लगा जाते हैं।
- **श्री कर्ममेश्वर नाथ मंदिर, सतना –** कर्ममेश्वर नाथ मन्दिर सतना शहर का एक प्राचीन एवं प्राकृतिक स्थल है। यह मन्दिर शिव भगवान जी को समर्पित है। इस मन्दिर को चौमुख नाथ शिव मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इस स्थल पर आने वाले पर्यटकों को गोमुख देखने हेतु मिलती हैं जिससे वर्ष भर पानी निकलता है। गोमुख से पहाड़ों का शुद्ध पानी आता है। गोमुख का पानी शुद्ध व मीठा है। पर्यटकों द्वारा गोमुख के पानी पीने व नहाने के लिए उपयोग किया जाता है। इस स्थल पर पर्यटकों को प्रकृति का बहुत सुन्दर दृश्य देखने के लिए मिलती है। यहाँ पर एक वॉच टावर भी बना हुआ है, जिससे पर्यटक यहाँ के चारों ओर का सुन्दर दृश्य देखते हैं। यह मन्दिर सतना जिला के नागौद ब्लाक के समीप है।
- **वृहस्पति कुण्ड जलप्रपात सतना –** वृहस्पति कुण्ड झरना सतना शहर में विद्यमान एक प्राकृतिक एवं दर्शनीय स्थल हैं यह झरना बरसाती मौसम में जल से लबालब रहता है। यह झरना बहुत ही सुन्दर है तथा चट्टानों से गिरता हुआ पानी देखने में सर्वाधिक आकर्षित लगता है यहाँ पर सबसे अधिक पर्यटक बरसात के समय एवं ठण्ड के समयावधि घूमने के लिए आते हैं। यहाँ पर झरने का पानी एक कुण्ड पर गिरता है। यह झरना सतना शहर से तकरीबन 50 किमी. की दूरी पर विद्यमान है। यह झरना बाघिन नदी पर निर्मित हुआ है। पर्यटन के दृष्टिकोण से यह स्थल काफी महत्व रखता हैं यहाँ के सुन्दर नजारे पर्यटकों को अपनी ओर खींचती हैं, यहाँ पर आने के बाद पर्यटकों को स्वर्ग की अनुभूति होती है।

वृद्धकूटा पर्वत –

यह पर्वत सतना शहर से 65 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह स्थल चारों तरफ से हरा–भरा है और हरे–भरे पहाड़ियों की घाटियाँ प्राकृतिक सुन्दरता पर्यटकों को अत्यन्त ही रमणीय लगता है। पर्यटन की दृष्टि से वृद्धकूटा पर्वत के अलावा यहाँ चार गुफाएँ मौजूद है, जिनमें रॉक पेंटिंग एवं मुराल पेंटिंग दृष्टिगोचर होता है। इस स्थल पर प्रत्येक वर्ष जनवरी माह के बसन्त पंचमी के दिवस विशाल मेला का आयोजन होता है। इस मेले में लाखों सैलानी सम्मिलित होते हैं। यहाँ की सौन्दर्यता पर्यटकों को बड़ा ही रोचक लगता है। वृद्धकूटा पर्वत पर्यटन की दृष्टि से एक आकर्षित केन्द्र है।

- **धारकुण्डी आश्रम –** सतपुड़ा पठार के विन्ध्यांचल पर्वत में विद्यमान धारकुण्डी आश्रम में प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक का अनुपम मिलन देखने को मिलता है। माना जाता है कि महाभारत में युधिष्ठिर एवं दक्ष का सम्वाद यहीं पर उपलब्ध कुण्ड में किया गया था। यह भू–भाग सतना जिले का मुख्य पर्यटन का आकर्षित स्थल है। हरे–भरे घाटियों, वादियों से भरपूर धारकुण्डी सतना जिला का मुख्य पर्यटन स्थल है। इस स्थान पर पहुँचने हेतु रास्ता थोड़ा कठिन है, परंतु यहाँ पहुँचने के पश्चात् प्रकृति का अद्भुत मनोरम दृश्य देखकर पर्यटकों की सारी थकान दूर हो जाती है।
- **पारसमनिया पर्वत एवं झरना –** इस स्थल की प्राकृतिक वातावरण की खूबसूरती पर्यटकों का मन आकर्षित कर लेती है। हरे–भरे वन एवं घाटी का मनोरम दृश्य बहुत ही आकर्षक है जहाँ पर्यटकों को स्थान–स्थान पर झरने व नदियाँ देखने को मिलती है। यह स्थल सतना शहर से तकरीबन 55 किमी. दूर विद्यमान है, जंगली गलियारों के मध्य उपस्थित परसमनिया पर्वत के चोटी के ऊपर से अत्यधिक मनोरम दृश्य परिलक्षित होता है। आगन्तुकों हेतु यह स्थान सबसे उत्तम है, क्योंकि उस समय जंगलों की हरियाली एवं स्थान–स्थान बहुता हुआ झरना बहुत ही आकर्षक लगता है।

जिले से प्रवाहित होने वाली सरितायें प्रपात रेखा का निर्माण करता है, जिसके फलस्वरूप यहाँ से बहने वाली नदियाँ पठारी भाग से जैसे ही उत्तर के वृहद प्रदेशों में प्रवेश करती है यहाँ अनुपम सुरम्य जल प्रपातों की रचना करती है। यहाँ की वनस्थली एवं जल प्रपातों के अनुपम सौन्दर्य स्थान–स्थान पर सुशोभित हो रहे हैं। इन सुरम्य प्रपातों की पहचान राज्य व राष्ट्रीय मानचित्रों पर नहीं हो पाई है, फिर भी कहीं संख्या में स्थानीय पर्यटक इन प्रपातों का आनंद लेने आते हैं। अधिकांशतः प्रपात वर्षा के दिनों में देखने योग्य होते हैं, यहाँ के प्रमुख प्रपातों का विवरण निम्नानुसार है –

सतना जिला के जंगली प्रदेशों की अपेक्षा विशेष मनोरम है। यहाँ के वनों एवं जल प्रपातों के अनुपम सौन्दर्य स्थान–स्थान पर सुशोभित हो रहे हैं। इस पवित्र भूमि के कोने–कोने के प्रकृति की सुषमा किलोल कर रही है। जिले के जलप्रपातों के समक्ष प्रकृति नदी उमंग के साथ नर्तन कर रही है और सतना जिले के गौरव को बढ़ा रही है। प्राकृतिक दृश्यों के दर्शन हेतु देश के कोने–कोने से आने वाले लोग इसकी गोद में आकर नत मस्तक हो जाते हैं। वस्तुतः इस जिले के सुरम्य प्रपातों को देखकर सहसा कविवर जयशंकर प्रसाद जी के मुँह से निकल पड़ा था कि – विन्ध्य भूमि में शांत गंभीर एवं शक्तिशाली शाश्वत प्रवाहित होने वाले जल प्रपातों का अभाव नहीं है।

प्रकृति प्रदत्त अनुकूल परिस्थितियाँ को देखते हुए सतना जिला पूर्वोत्तर स्थल में स्थित एक आदर्श पर्यटक स्थल होना चाहिए था किंतु ऐसा नहीं हो सका जिसके लिए कई कारक उत्तरदायी रहे हैं। यह जिला अपने आंचल में कई पर्यावरणीय भिन्नताओं को समेटे हैं जो दृश्य सौन्दर्य स्थल के रूप में पर्यटन केन्द्रों को जन्म देते हैं। यहाँ के घने वन एवं गगनचुम्बी पर्वतों की उपत्यका में कहीं समतल भूमि है तो कहीं ऊँची–नीची टीलेदार धरती, जिनके बीच में बहती हुई टेढ़ी–मेढ़ी सरिताओं के बीच कल–कल करते झरने सहज ही मन को मोहने वाले हैं। इस अपूर्व सौन्दर्य से भरे स्थल पर इस अंचल का आदिम तथा पाश्चात्य जन समुदाय निवास करता है। सतना जिले का भू–भाग शैलानियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। यह अपनी नैसर्गिक छटा अद्वितीय ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर विभिन्न है, भोजन इत्यादि के लिए छोटे–छोटे होटल है, जिनमें माँग पर भोजन उपलब्ध कराया जाता है।

सतना जिला में विद्यमान इन प्राकृतिक सुन्दरताओं के कारण जो भी पर्यटक यहाँ आते हैं, उनका मन रमणीय हो जाता है। यहाँ के वन, नदियाँ, झरने, झील, जलप्रपात इत्यादि प्राकृतिक दृश्यों को देखकर आनंद से विभोर हो जाते हैं। सतना जिले को प्रकृति का वरदान प्राप्त है क्योंकि यह भू–भाग चारों ओर प्राकृतिक सौन्दर्य से सम्पन्न है। जिले के इन मनोरम दृश्यों को देखकर काफी आश्चर्य होता है। यहाँ विद्यमान पर्वतीय पठारें जिनमें हरे–भरे पेड़ों के कारण इसकी सुन्दरता काफी अधिक बढ़ जाती है। यह जिले अनेक पर्यटक स्थलों को उत्पन्न किया है। सतना जिले के इन स्थलों पर वर्ष भर पर्यटकों का आवागमन होता रहता है जिससे जिले को काफी आय की प्राप्ति हो जाती है। जिले के प्राकृतिक आकर्षण को देखकर यहाँ पर आने वाले पर्यटक/आगन्तुकों के मन को अपनी ओर खींच लेता है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सतना जिला पर्यटन के दृष्टिकोण से एक उत्तम जिला है। यहाँ पर पर्यटन आकर्षण के अंतर्गत प्राकृतिक आकर्षण, ऐतिहासिक आकर्षण, धार्मिक आकर्षण, जैविक आकर्षण, सांस्कृतिक आकर्षण, औद्योगिक आकर्षण एवं अन्य आकर्षण हेतु अनेक स्थल मौजूद है। पर्यटन की दृष्टि से जिले में स्थित इन पर्यटन स्थलों से काफी आय प्राप्त हो रहा है, जिससे जिले के विकास के साथ–साथ राज्य का भी विकास अग्रसर हो रहा है।

संदर्भ –

1. सिंह, डॉ. सुमन्त (2005–06) – मध्यप्रदेश का पारिस्थितिकी पर्यटन, यू.जी.सी. प्रोजेक्ट
2. नेमी, डॉ. जगमोहन (2010) – पर्यटन मार्केटिंग में विकास, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
3. द्विवेदी, कैलाश (1995) – राय ऋग्वैदिक भूगोल, साहित्य निकेतन, कानपुर
4. पुरोहित, खण्डेवाल (1993) – सांस्कृतिक भूगोल, नूतन प्रकाशन, कोट द्वार, उत्तरप्रदेश
5. भाटिया ए.के. (1978) – टुरिज्म इन इंडिया, हिस्ट्री एण्ड डेवलपमेंट स्ट्रलिंग, नई दिल्ली

6. माथुर सुरेन्द्र (1962) – यात्रा साहित्य का उद्‌भव और विकास, साहित्य प्रकाशन मालीवाड़ा, दिल्ली
7. योजना पत्रिका – पर्यटन विशेषांक
8. कुरूक्षेत्र पत्रिका – पर्यटन विशेषांक
9. सरित पत्रिका – पर्यटन विशेषांक